योशी की दावत



लेखन: किमिको काज़ीकावा

चित्र: यूमी हो

भाषान्तर:
पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बहुत समय पहले जापान के येडो शहर में एक पंखे बनाने वाला रहता था। उसका नाम था योशी। योशी को भुनी हुई ईल, यानी साँप-मछली खाना बेहद पसन्द था। वह हर रात अपने पड़ौसी साबू को साँप-माछ पकड़ने जाते देखता। तब हर सुबह उन्हें उसकी हिबाची (कोयले वाली अंगीठी) पर भूनते और ग्राहकों का इन्तज़ार करते देखता।

"साँप-मच्छी भूनने वाले को अपनी बची-खुची मछली अपने पड़ौसी के साथ बाँटनी चाहिए," योशी बड़बड़ाता।

"पंखा बनाने वाले को अपने पड़ौसी से साँप-माछ खरीदनी चाहिए," साबू शिकायत करते भुनभुनाता।

पर योशी को अपनी नकदी-पेटी में सिक्कों की खनक बड़ी ही प्यारी लगती थी। सो वह कभी साबू की मछली नहीं खरीदता था। वह अपने उबले चावल ले, अकेले ही खाने बैठता और साथ में साबू की भुनी साँप-माछ की खुशबू का मज़ा लेता - जब तक साबू ने उसे सारी की सारी सूँघी हुई साँप-माछ का बिल न थमा दिया।

योशी ने साबू को यह रकम कैसे चुकाई यह ज़बानी लेन-देन के आनन्द का एक दिलचस्प किस्सा है। किस्सा यह भी साबित करता है कि ज़िन्दगी में, जैसे धंधे-कारोबार में भी, आप ठीक वही पाते हैं जिसकी क़ीमत आपने चुकाई हो।

योशी की दावत



लेखन: किमिको काज़ीकावा

चित्र: यूमी हो

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

योशी की दावत विलियम एलियट ग्रिफिस की पुस्तक *जैपनीस् फेयरीवर्ल्ड स्टोरीस् फ्राम वन्डरलैण्ड ऑफ जैपेन* (जे.एच. बारहेय, 1850) से रूपान्तरित की गई है। लेखिका जापानी इतिहासकार किमिका मेन्स् की जानकारियों और सहायता के लिए उनकी आभारी हैं।

बहुत समय पहले, जापान के शहर येडो में एक पंखे बनाने वाला रहता था। नाम था उसका योशी। उसे भुनी हुई साँप-माछ बेहद पसन्द थी।

योशी, साबू के पड़ौस में रहता था, जो येडो की सबसे बेहतरीन, खुशबूदार साँप-माछ बनाता था। पर साबू के पास कम ही ग्राहक आते थे। दरअसल उसकी *हिबाची* (अंगीठी) को ढूंढ़ पाना मुश्किल था। क्योंकि वह शहर के छोर पर एक छोटी-सी गली में लगभग गुम-सी थी।







हर रात योशी अपने पड़ौसी साबू को साँप-मछली पकड़ने जाते देखता।



हर दिन योशी, साबू को साँप-माछ भूनते-पकाते और ग्राहकों की राह तकते देखता।



और हर शाम योशी, मायूस साबू को अपनी बची हुई भुनी मछली खाते देखता।

''साँप-माछ भूनने वाले को अपनी बची-खुची मछली अपने पड़ौसी के साथ बाँटनी चाहिए,'' योशी बड़बड़ाता।

''पंखे बनाने वाले को अपने पड़ौसी से भुनी साँप-माछ ख़रीदनी चाहिए,'' साबू शिकायती लहज़े में भुनभुनाता।

पर योशी को अपनी नकदी-पेटी में सिक्कों की खनक इतनी अच्छी लगती थी कि वह साबू की भुनी मछली ख़रीद ही नहीं पाता था।

सो वह ख़रीदने के बजाए खाते समय अपने उबले चावल खाता और साथ में साबू की भुनी साँप-माछ की खुशबू सूंघता जाता। जिस चीज़ को मुँह में डालने के लिए वह अपनी दमड़ी तक नहीं खर्चता था, उसीका मज़ा वह अपनी नाक के सहारे ले लेता।





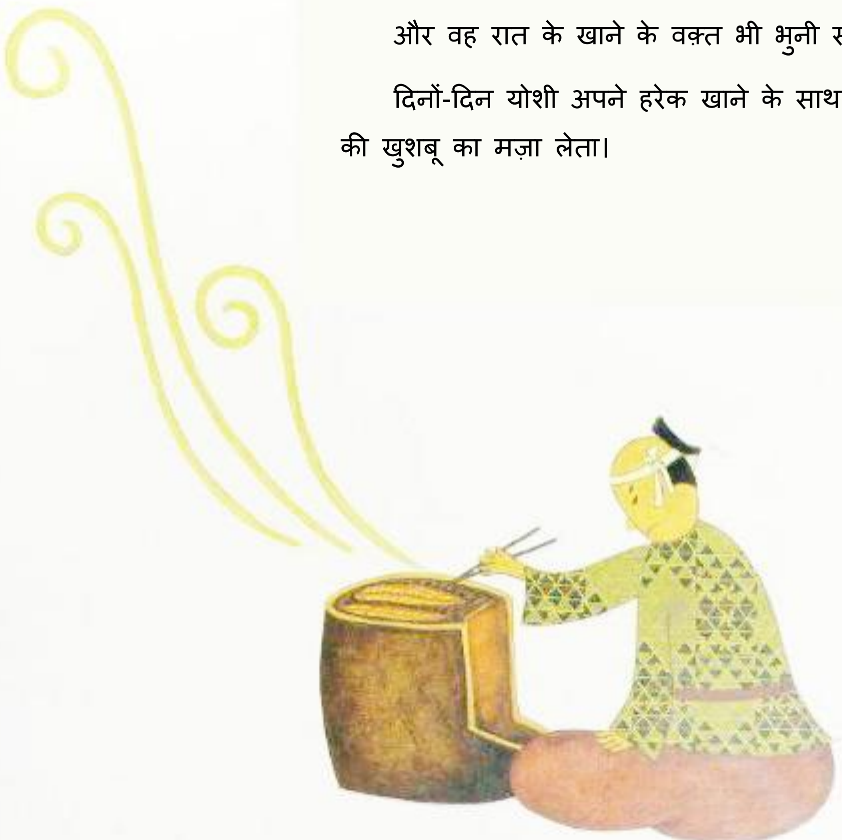


योशी भुनी साँप-माछ को सुबह-सुबह नाश्ते के वक़्त सूंघता।

वह दोपहरी के खाने के समय भुनी साँप-माछ सूंघता।

और वह रात के खाने के वक़्त भी भुनी साँप-माछ सूंघता।

दिनों-दिन योशी अपने हरेक खाने के साथ भुनी साँप-माछ की खुशबू का मज़ा लेता।



एक रोज़ योशी ने साबू से कहा, "मुझे बेहद खुशी है कि तुम साँप-माछ भूनते हो, बदबूदार *साम्मा* (छोटी समुद्री मछली) नहीं। तुम्हारी साँप-माछ की सुगंध दिल को खुश करती है!"

साबू की भौंहे तन गईं, "यह सब तो ठीक है, पर तुम आख़िर उसे ख़रीदोगे कब?"

"कभ्भ्भी नहीं!" योशी ने हवा को सूंघते कहा। "तुम्हारी लज़ीज़ साँप-माछ की दिलकश महक दरअसल मेरी नकदी-पेटी का वज़न बढ़ाती है"

"सो कैसे?" साबू ने जानना चाहा।

"मेरे लिए तुम्हारी मंहगी भुनी माछ की खुशबू को सूंघना उसे सचमें खाने के बराबर ही है। मैं तो अब सिर्फ़ चावल ख़रीदता हूँ," योशी खुशी से गमकते बोला। "तुम्हारी साँप-माछ की वजह से मैं हर खाने के साथ अमीर बनता चला जाता हूँ।"

साबू ने गुस्से से पैर पटकते कहा, "बस, तुम्हारे ही कारण में ग़रीब हूँ। अगर तुम मुझे उन सारी मछलियों के पैसे देते जिन्हें तुमने अब तक सूंघा है, तो मेरी भी तिजोरी भरी होती।"





इतना कह साबू ने गुस्से में आ एक बिल बनाया।

बिल योशी को थमाते वह बोला, "मेरे पड़ौसी भाई, तुमने अब तक जितनी भी भुनी साँप-माछ सूंघी है, उनके लिए तुम मेरे देनदार हो, तुम्हें इस बिल का भुगतान करना होगा।"

योशी ने अपनी ठुड्डी को उंगली से थपथपाया। "तुम बिलकुल सही कह रहे हो साबू। बात तो तुम्हारी जायज़ है। रुको, मैं अपनी नकदी-पेटी लाता हूँ।"

योशी धातु से बनी अपनी पेटी साबू के पास लाया। उसने बड़ी सावधानी से सिक्के गिने। सोने के *कोबाना*, चाँदी के *इची-बू* और *नी-बू* (जापानी सिक्के)।

"तो यह वह पूरी रकम है जो तुम कहते हो मुझे चुकानी है।" पर सिक्के साबू को देने के बदले योशी ने सारे सिक्के पेटी में वापस धर दिए।





उसने पेटी उठाई और उसे हिलाया।



खन खना खन खसर-पसर...
खन खना खन खसर-पसर...

सिक्के पेटी में खनकने लगे और योशी उनकी आवाज़ के साथ झूमने लगा।

वह सड़क पर नाचा।



खना खन खसर-पसर

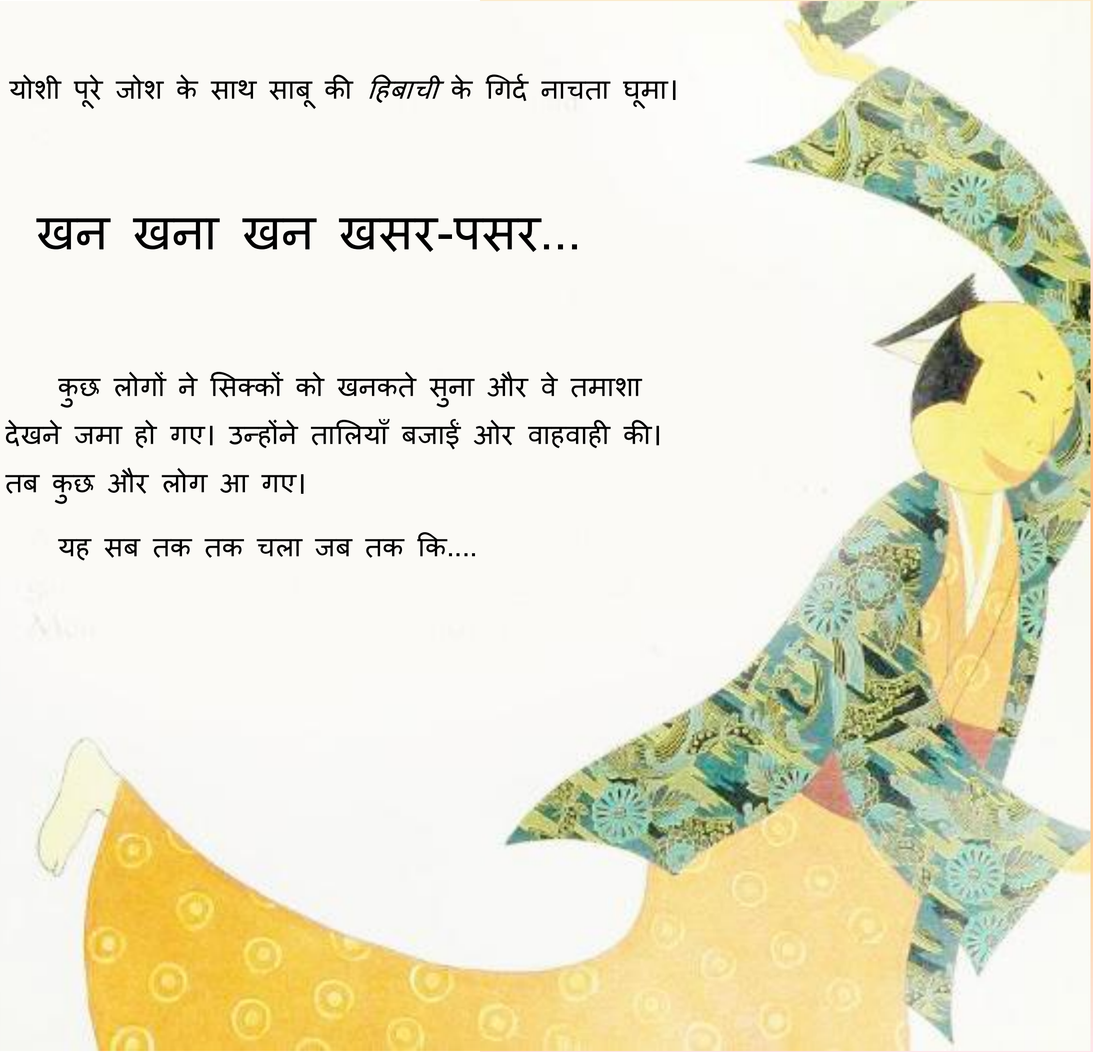


योशी पूरे जोश के साथ साबू की *हिबाची* के गिर्द नाचता घूमा।

खन खना खन खसर-पसर...

कुछ लोगों ने सिक्कों को खनकते सुना और वे तमाशा देखने जमा हो गए। उन्होंने तालियाँ बजाईं ओर वाहवाही की। तब कुछ और लोग आ गए।

यह सब तक तक चला जब तक कि....





"थमो, रुको!" साबू चीखा।

"मुझे मेरे पैसे दो!"

योशी ने साँप-माछ भूनने वाली *हिबाची* को अपने पंखे से छुआ।

वह बड़ी शाइस्तगी से बिलकुल नीचे तक झुका और बोला,

"यार पड़ौसी, अपना हिसाब अब चुकता हो गया।"

"क्या?" साबू चीखा। "तुमने भुगतान तो किया ही नहीं!"

"मैं पूरा भुगतान कर चुका हूँ," योशी ने मुस्करा कर कहा।

"तुमने साँप-माछ की खुशबू के लिए पैसे मांगे और मैंने अपने सिक्कों की खनखनाहट से चुकारा कर दिया।"

साबू का चेहरा गुस्से से तमतमा कर लाल-सुर्ख हो उठा।

"योशी तुम्हें इसकी भरपाई करनी होगी!"

उस शाम योशी इन्तज़ार करता रहा कि साबू साँप-माछ पकड़ने जाए।

पर साबू घर से निकला ही नहीं।

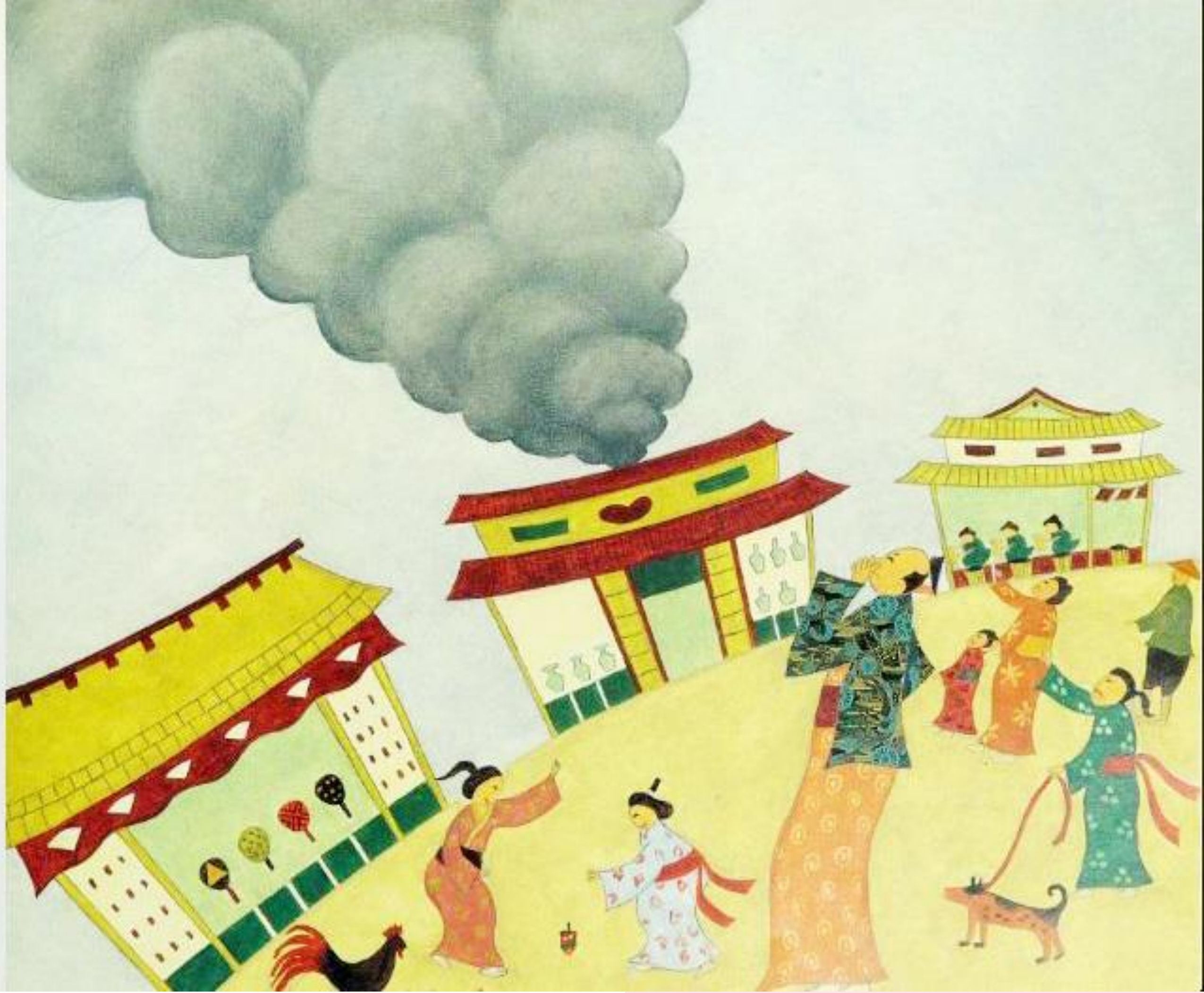
अगली सुबह योशी एक भयानक बदबू से चौंक कर जागा।

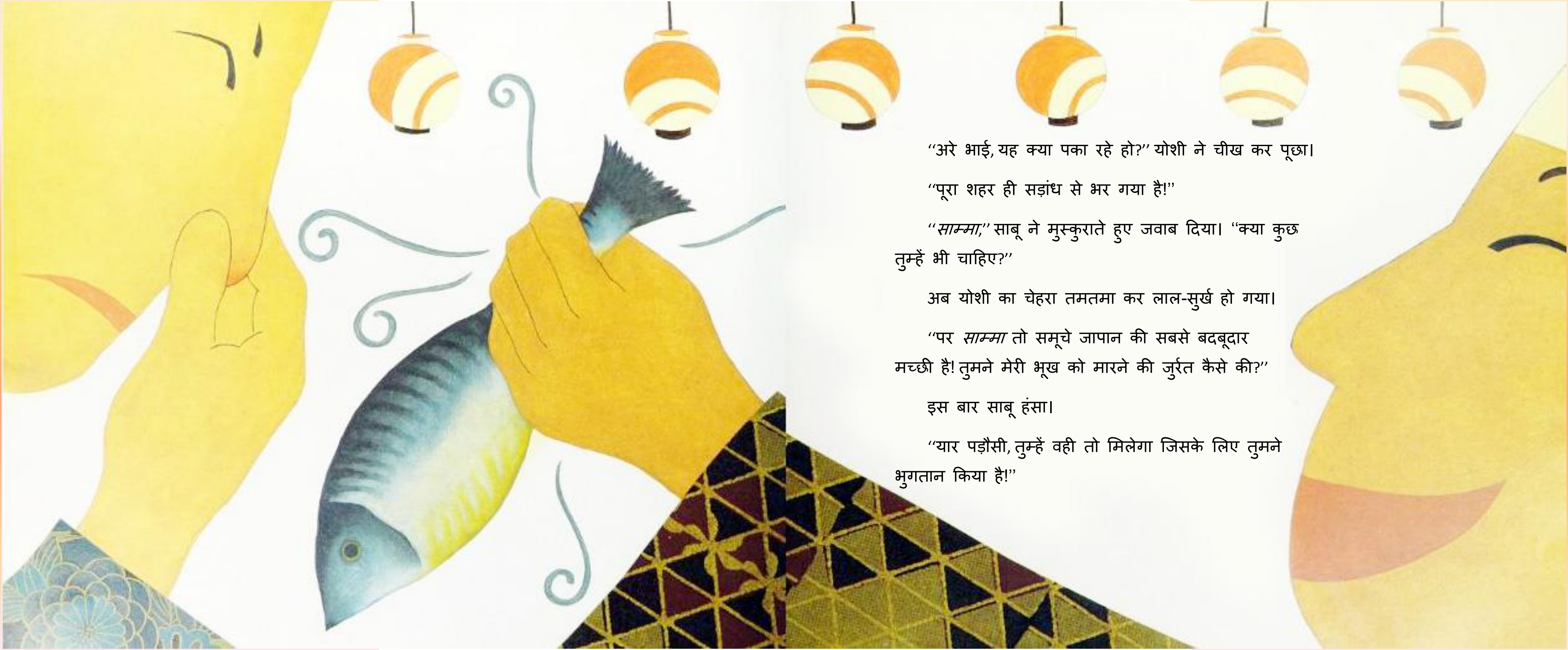
“*कुसाई!*” (सड़ांध) योशी चीखते हुए घर से बाहर निकला।

पर वहाँ बाहर बदबू और भी बुरी थी।

साबू की *हिबाची* से घना धुँआ उठ रहा था।







"अरे भाई, यह क्या पका रहे हो?" योशी ने चीख कर पूछा।

"पूरा शहर ही सड़ांध से भर गया है!"

"*साम्मा*," साबू ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "क्या कुछ तुम्हें भी चाहिए?"

अब योशी का चेहरा तमतमा कर लाल-सुर्ख हो गया।

"पर *साम्मा* तो समूचे जापान की सबसे बदबूदार मच्छी है! तुमने मेरी भूख को मारने की जुर्रत कैसे की?"

इस बार साबू हंसा।

"यार पड़ौसी, तुम्हें वही तो मिलेगा जिसके लिए तुमने भुगतान किया है!"



योशी अपने घर के अन्दर भागा और अपने सारे *शोजी* परदे (लकड़ी के खाँचों में मढ़े कागज़ से बने परदे) बन्द किए। वह अपने पंखे से हवा को हिलाता रहा, पर बदबूदार मछली की गंध जस की तस बनी रही।

योशी ने नाश्ते के वक़्त सड़ांध मारती *साम्मा* सूंघी।

दोपहर के खाने के समय सड़ांध मारती *साम्मा* सूंघी।

और रात के खाने के वक़्त भी वही सड़ांध मारती *साम्मा* सूंघी।

योशी ने हर बार अपने चावल खाने की कोशिश की, पर बदबू से उसका जी इतना मिचलाया कि उससे कुछ खाया ही नहीं गया।





तब योशी को एक ख़याल आया।

उसने अपनी नाक बन्द की और साबू के पास जाकर बड़ी ही शाइस्तगी से झुका।

''मेरे भाई पड़ौसी, मैं जानता हूँ कि हमारे आपस में मतभेद रहे हैं। पर मुझे लगता है कि हम उन्हें सुलझा सकते हैं।''

''वह भला कैसे?'' साबू ने पूछा।

''ऐसा है कि तुम बस थोड़ी-सी साँप-माछ पकाओ, बाकी मुझ पर छोड़ दो,'' योशी ने जवाब दिया।

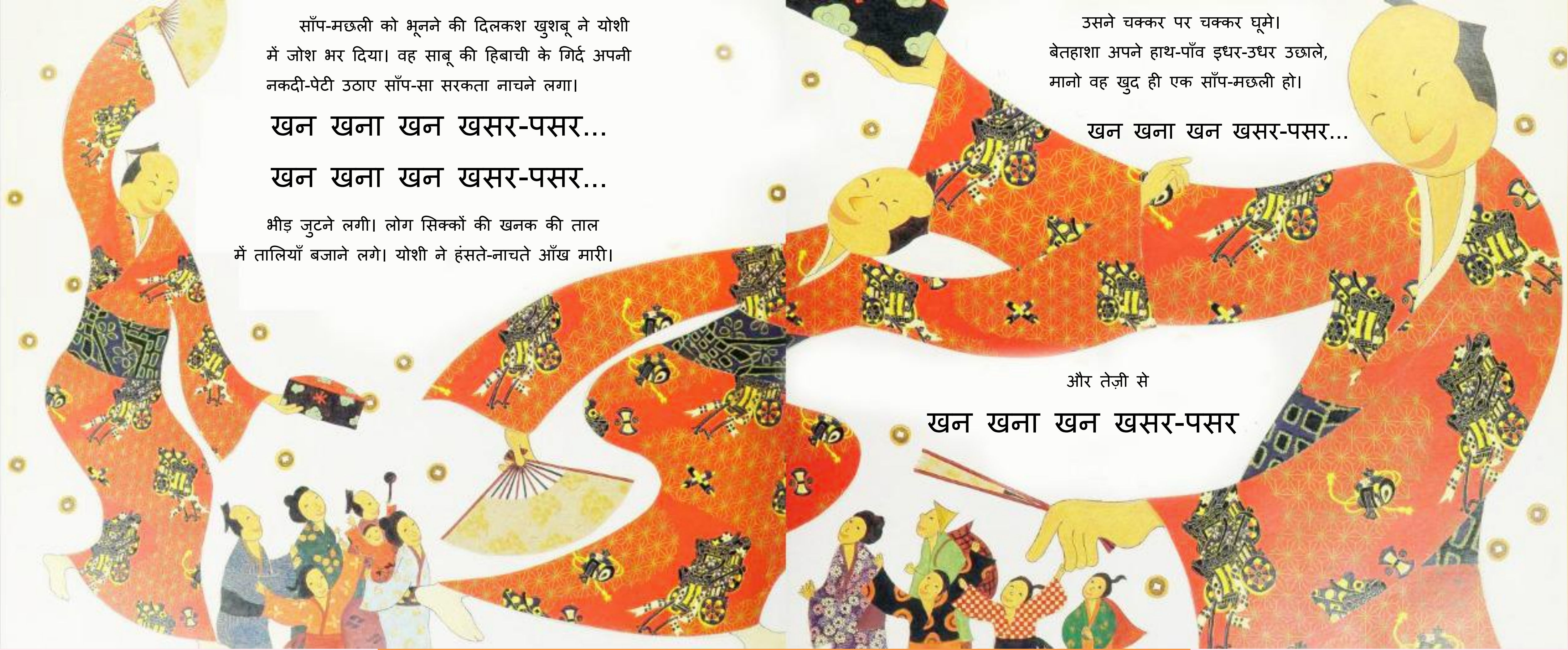






अगले दिन योशी ने अपना सबसे खूबसूरत *किमोनो* (जापानी पोशाक) पहना।

''*काबायाकी*,'' (साँप-माछ का खास पकवान) साबू की *हिबाची* के गिर्द नाचते योशी ज़ोर से बोला।



साँप-मछली को भूनने की दिलकश खुशबू ने योशी में जोश भर दिया। वह साबू की हिबाची के गिर्द अपनी नकदी-पेटी उठाए साँप-सा सरकता नाचने लगा।

खन खना खन खसर-पसर...

खन खना खन खसर-पसर...

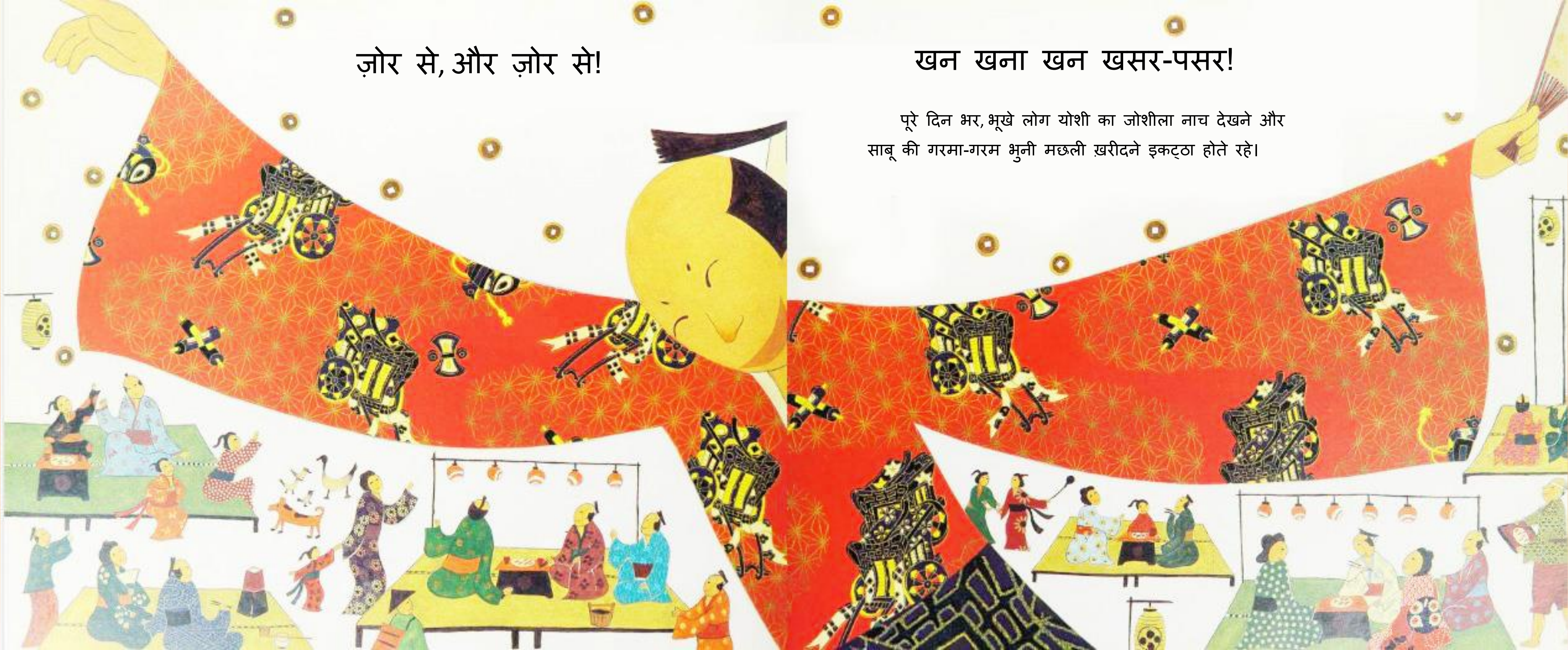
भीड़ जुटने लगी। लोग सिक्कों की खनक की ताल में तालियाँ बजाने लगे। योशी ने हंसते-नाचते आँख मारी।

उसने चक्कर पर चक्कर घूमे। बेतहाशा अपने हाथ-पाँव इधर-उधर उछाले, मानो वह खुद ही एक साँप-मछली हो।

खन खना खन खसर-पसर...

और तेज़ी से

खन खना खन खसर-पसर



ज़ोर से, और ज़ोर से!

खन खना खन खसर-पसर!

पूरे दिन भर, भूखे लोग योशी का जोशीला नाच देखने और साबू की गरमा-गरम भुनी मछली ख़रीदने इकट्ठा होते रहे।

जब दिन ख़त्म हुआ, योशी ने हमेशा की तरह अपने चावल उबाले और हरी चाय बनाई। वह खाने बैठा ही था कि साबू एक बड़ी-सी थाली में भुनी साँप-माछ लिए आ पहुँचा।

"*आरिगातो* (शुक्रिया), ढ़ेरों ग्राहक लाने के लिए भाई पड़ौसी।"

"*आरिगातो*," योशी ने जवाब दिया, पर तुम्हारा यह दरियादिली से भरा तोहफ़ा मैं तब ही ले सकूँगा जब तुम भी मेरे साथ खाना खाने बैठो।"

दोनों पड़ौसी साथ-साथ खाने बैठे।

योशी ने मछली का टुकड़ा उठाया और एक बड़ा-सा निवाला खाया। वह मुस्कुराया।

"अम्म्म्म्म! मैं गलत था!" वह बोला। "भुनी साँप-माछ को अकेले बैठ सूंघने से कहीं बेहतर है उसे किसी दोस्त के साथ सच में खाना।"



इसके बाद हर दिन योशी खुशी से भरी भीड़ के सामने साबू की हिबाची के गिर्द नाचता।

और हर शाम दोनों पड़ौसी योशी के आँगन में बैठ हंसते-खिलखिलाते साबू की गरमा-गरम भुनी साँप-माछ खाते।

